खण्ड - 'ङ'

अलंकार

(1) अनुप्रास अलंकार

परिभाषा – स्वरों में समानता न होते हुए भी समान व्यजनों अथवा वर्णों का बार-बार आना अर्थात् उनकी आवृत्ति होना अनुप्रास अलंकार कहलाता है। 'अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्।'

उदाहरण – लताकुञ्जं गुञ्जन्मदबलिपुञ्जं चपलयन्,
सामलिङ्गन्नङ्गं द्रुततरमनङ्ग प्रबलयन्।
मरुन्मन्दं मन्दं दलितमरविन्दं तरलयन्
रजो वृन्दं विन्दन् किरति मकरन्दं दिशिदिशि।।

स्पष्टीकरण – इस श्लोक में 'ङ्ग' 'ङ्ग' और 'न्द' 'न्द' का वर्णसाम्य होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

अन्य उदाहरण–

(1) ''कावेरी वारि पावनः पवनः''

उपर्युक्त उदाहरण में स्वरों की विषमता होने पर भी व्, र्, प्, व्, न् व्यञ्जन वर्णों में अनुप्रास अलंकार है।

(2) ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दी कृतवपुः शशी
दध्रे कामपरिक्षाम कामिनी गण्ड पाण्डुताम्।।

(3) इस उदाहरण में न्द-न्द, ण्ड-ण्ड में आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

(2) यमक अलंकार

परिभाषा – स्वरों और व्यञ्जनों के सार्थक समूह की पुनरावृत्ति जहाँ इस प्रकार हो कि प्रत्येक आवृत्ति में अर्थ में परिवर्तन हो जाय वहाँ यमक अलंकार होता है। निरर्थक पदों की आवृत्ति में भी यमक होता है। 'सत्यर्थे पृथगर्थाया; स्वरव्यञ्जनसंहतेः। क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।।'

उदाहरण – नवपलाशपलाशवनं पुरः स्फुटपरागपरागतपङ्कजम्।
मृदुलतान्तलतान्तमलोकयत् ससुरभिंसुरभिंसुमनो भरैः।

स्पष्टीकरण – इस श्लोक में पलाश-पलाश, पराग-पराग, लतान्त-लतान्त पदों की आवृत्ति है परन्तु अर्थ भिन्न-भिन्न होने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण–

सरस्वति! प्रसाद मे स्थितिं चित्त सरस्वति!
सरस्वति! कुरु क्षेत्र कुरुक्षेत्र सरस्वति।

इस श्लोक की प्रथम पंक्ति में प्रयुक्त सरस्वति का अर्थ 'वाग्देवी' सरस्वती है और द्वितीय सरस्वति का अर्थ 'समुद्र' है। द्वितीय पंक्ति के सरस्वति शब्द का अर्थ सरस्वती 'नदी' है। द्वितीय पंक्ति का एक 'कुरु' क्रिया के रूप में प्रयुक्त है जिसका अर्थ है करो और दूसरे 'कुरु' का अर्थ कुरु प्रदेश के रूप में हुआ है। इसी पंक्ति में प्रथम क्षेत्र का अर्थ शरीर है और द्वितीय का अर्थ 'स्नान' के रूप में हुआ है।

●●